शिक्षा के लक्ष्य एवं उनके अनुरूप पाठ्यचर्या, बच्चों को क्या व कैसे सिखाया जाए, हर समाज के लिए विचारणीय रहे हैं। पाठ्यचर्या की प्रासंगिकता भी बदलते समाज की जरूरतों से तय होती है। अत: हर समाज में शिक्षा परिवर्तनशील एवं सचेतन प्रक्रिया होती है। इस लेख, व्यंग्यात्मक कथाशैली, में यही दर्शाया गया है कि कुछ लोग बदलते समाज की जरूरतों एवं परिस्थितियों के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था को ढालने का प्रयत्न करते हैं तो कुछ ऐसे परिपाटीवादी भी होते हैं जो किसी भी प्रकार के परिवर्तन को संशय की दृष्टि से देखते हैं और परिवर्तन का विरोध करते हैं। पाठ्यचर्या निर्धारण के संदर्भ में यह बहस आज भी समीचीन है।

व्याघ्रदन्ती पाठ्यचर्या

❑ हैरॉल्ड बैंजामिन

(संयुक्त राज्य अमेरिका में 1939 में पाठ्यचर्या पर एक व्यंग्य छपा था, यह आलेख इसी से लिया गया है। यह एक प्रागैतिहासिक कबीले की कथा है, जो अपने बच्चों के लिए एक व्यवस्थित पाठ्यचर्या बनाता है ताकि स्थानीय पर्यावरण में उनके अस्तित्व संबंधी आवश्यकताएं पूरी हो सकें। अत: पाठ्यचर्या में इस प्रकार के विषय होते हैं जैसे 'दन्ती-बाघ-को आग से डराना'। पर कालान्तर में स्थानीय पर्यावरण में बदलाव आता है और बड़े दांतों वाले बाघ नष्ट हो जाते हैं। अस्तित्त्व संबंधी आवश्यकताएं बदलती हैं। इस बदलाव के चलते पाठ्यचर्या में बदलाव के प्रयास होते हैं, जिनका जमकर विरोध होता है।)

सचेतन शिक्षा का विचार

मेरी कल्पना में जिस पहले महान शिक्षा-सिद्धांती व शिक्षा के क्षेत्र में व्यावहारिक कार्य करने वाले का नाम दर्ज है वह चेलन युग का व्यक्ति था। उनका पूरा नाम था नव-मुष्टि-हथौड़िया, पर मैं सुविधा के लिए उसे नव-मुष्टि नाम से ही संबोधित करूंगा।

नव–मुष्टि एक कर्ता था, बावजूद इस तथ्य के कि उसका वातावरण ऐसा था जिसमें बहुत जटिल काम करने की गुंजाइश नहीं थी। आपने नाशपाती के आकार के छिप्टीदार पाषाण उपकरण के बारे में अवश्य ही सुना होगा, जिसे पुरातत्ववेत्ताओं ने मुष्टि हथौड़े का नाम दिया है। नव-मुष्टि को ख्याति इस बात से मिली थी कि उसने इसी उपकरण को बेहतर तरीके से बनाया व अधिक उपयोगी आकार दिया। उसके जैसे मुष्टि हथौड़े उसके कबीले में पहले कभी बने ही न थे। साथ ही उसके द्वारा बनाए गए शिकार-मुद्गर भी पहले से बेहतर अस्त्र सिद्ध हुए। साथ ही अग्नि उपयोग की उसकी तकनीक सरल होने के साथ सटीक भी थी। उसके समुदाय की जिन कामों को करने की आवश्यकता थी, उन्हें वह बखूबी करना जानता था। उसमें इतनी ऊर्जा भी थी कि वह आगे बढ़ उन्हें कर डाले। इन गुणों के चलते वह एक शिक्षित व्यक्ति था।

नव-मुष्टि एक विचारक भी था। आज की ही तरह उस युग में भी तमाम ऐसे लोग थे जो सोचने के श्रम और पीड़ा से बचने के वास्ते कई उपाय करते थे। परन्तु अपने साथियों के विपरीत नव–मुष्टि स्वयं को उस बिन्दु के परे भी ठेलता था जहां सोचना-विचारना अपरिहार्य बन जाता है। बुद्धिमानी के जिस गुण ने उसे बेहतर उपकरण निर्माण की सामाजिक रूप से स्वीकार्य गतिविधि की ओर धकेला, उसी गुण ने उसे चिंतन की अस्वीकार्य गतिविधि की ओर भी ठेला। जहां कबीले के अन्य पुरुष सफल शिकार के बाद ठूंस कर मांस भक्षण कर, धुत्त हो, कई घंटों निश्चेत सोते थे, वहीं नव-मुष्टि स्वाल्प खाता, कम सोता और अपने साथियों से पहले जाग आग के सामने बैठ सोचता। वह लपटों को घूरता और अपने पर्यावरण के विभिन्न पक्षों पर चिंतन करता। यह सब उस हद तक चलता रहा कि वह अपने कबीले के स्थापित व स्वीकार्य तौर-तरीकों से असंतुष्ट हो गया। उसे तमाम ऐसी झलकियां दिखने लगीं जिनमें वह अपने, अपने परिवार, अपने समूह के बेहतर जीवन की

कल्पना करता। इस विकास के चलते वह एक खतरनाक व्यक्ति बन गया।

यही वह पृष्ठभूमि है जिसमें उस कर्ता-विचारक को सचेतन व व्यवस्थित शिक्षा प्रणाली की अवधारणा सूझी।

शिक्षा अभ्यास से जुड़ने की तात्कालिक प्रेरणाा उसे अपने बच्चों को खेलते हुए देख मिली। उसने देखा कि बच्चे गुहाद्वार के पास हड्डियों, खपच्चियों और चमकदार रंगीन पत्थरों से खेल रहे हैं। उसने गौर किया कि बच्चों के खेल में गतिविधि के तात्कालिक आनंद से परे कोई उद्देश्य नहीं होता। तब उसने बच्चों की गतिविधियों की तुलना वयस्कों की गतिविधियों से की। उसने पाया कि बच्चे मौज-मस्ती के लिए खेलते हैं; परन्तु वयस्क अपने जीवन की सुरक्षा और समृद्धि के लिए काम करते हैं। बच्चे हड्डियों, खपच्चियों और पत्थरों का उपयोग करते हैं जबकि वयस्क भोजन, आश्रय व वस्त्र की व्यवस्था करते हैं। बच्चे स्वयं को ऊब से बचाते हैं, जबकि वयस्क स्वयं को खतरों से बचाते हैं।

''अगर मैं बच्चों से वे काम करवा सकूं जिनसे अधिक व बेहतर भोजन, आश्रय, कपड़े और सुरक्षा मिले'' नव-मुष्टि ने सोचा, ''तो मैं इस कबीले के बेहतर जीवन में मदद कर सकूंगा। कल, जब ये बच्चे बड़े होंगे तो उनके पास खाने को अधिक मांस होगा, अधिक पशुचर्म होगा जिससे वे ठंड से बचेंगे, उनके पास सोने के वास्ते बेहतर गुफाएं होंगी और उस धारदार वक्रदंत का खतरा भी कम होगा, जो अंधेरी रातों में इन्हीं पगडंडियों से गुजरता है।''

शैक्षिक लक्ष्य व पाठ्यचर्या निर्माण

शैक्षणिक लक्ष्य तय करने के बाद नव-मुष्टि ने पाठ्यचर्या बनाई ताकि उस लक्ष्य को सिखाया जा सके। ''हम कबीले के सदस्यों को कौन-कौन सी चीजें सीखनी पड़ती हैं, ताकि हम भरपेट भोजन पा, स्वयं गर्म खालें ओढ़ सर्दी से बचे रहें और हमारे दिल दिमाग भय मुक्त हों ?'' उसने स्वयं से पूछा।

प्रश्न का उत्तर पाने के लिए उसने अपने दिमाग में तमाम गतिविधियों पर नजर दौड़ाई और विचार किया, ''हमें उस मोड़ के परे संकरी खाड़ी के पास बने तालाब में खाली हाथ मछलियां पकड़नी पड़ती हैं।'' उसने खुद से कहा, ''मोड़ के पास वाले तालाब में भी हमें अपने हाथों से मछलियां पकड़नी होती हैं। मोड़ के दूसरी ओर स्थित तालाब में भी ठीक यही करना पड़ता है। गरज यह कि तालाब दर तालाब हमें ठीक यही करना पड़ता है। हम हमेशा नंगे हाथ मछलियां पकड़ते हैं।''

यों नव-मुष्टि को अपने प्रथम विषय की प्रथम पाठ्यचर्या मिली - नंगे-हाथों-मछलियां-पकड़ना।

''इसी तरह हम छोटे रोएंदार घोड़ों का मुद्गर से शिकार करते हैं'', उसने अपना विश्लेषण जारी रखा। ''हम खाड़ी के किनारे उन पर मुद्गरों से तब प्रहार करते हैं जब वे पानी पीने वहां आते हैं। झाड़ियों के झुरमुट में भी, जहां वे सोते हैं, हम मुद्गरों से ही उन पर आघात करते हैं। ऊपर चारागाहों में जहां वे चरते हैं वहां भी हम उन्हें मुद्गरों से मारते हैं। हमें वे जहां भी मिलें, हम उनका शिकार इसी विधि से करते हैं।''

यों रोएंदार-घोड़ें-पर-मुद्गर-प्रहार पाठ्यचर्या का दूसरा मुख्य विषय बना।

''और अंत में हम वक्रदन्ती बाघों को आग से डरा कर भगाते हैं'', नव-मुष्टि सोचता गया। ''हमारी गुफाओं के मुख से हम उन्हें आग से भगाते हैं। हमारी पगडंडियों पर दिखे तो जलती शाखाओं की मदद से उन्हें भगाते हैं। पानी के स्रोत से हम जलती मशालों को हिला-हिला कर उन्हें भगाते हैं। हमें उन्हें भगाने की हमेशा जरूरत पड़ती है और यह काम हम हमेशा ही आग के सहारे करते हैं।'' यों नव-मुष्टि को तीसरा विषय मिला - वक्रदन्ती-बाघ-को-आग से डराना।

पाठ्यचर्या विकसित कर लेने के बाद नव-मुष्टि अपने बच्चों को अपनी गतिविधियां करने के दौरान साथ ले गया। उसने उन्हें तीनों विषयों के अभ्यास के अवसर दिए। बच्चों को सीखना पसंद था। रंगीन पत्थरों से मजे के लिए खेलने के बनिस्बत इन उद्देश्यपूर्ण गतिविधियों से जुड़ना अधिक मजेदार लगा। उन्होंने ये नई गतिविधियां अच्छी तरह सीखीं और यों नई शिक्षा प्रणाली सफल सिद्ध हुई।

जैसे-जैसे नव-मुष्टि के बच्चे बड़े होने लगे यह भी स्पष्ट नजर आने लगा कि अच्छे व सुरक्षित जीवन जीने में वे उन अन्य बच्चों से बेहतर हैं जिन्हें व्यवस्थित शिक्षा नहीं मिली थी। कबीले के कुछ अधिक चतुर लोगों ने तब वही करना प्रारंभ किया जो नव-मुष्टि ने किया था। क्रमश: मछलियां पकड़ना, घोड़ों पर मुद्गर प्रहार करना और बाघों को डराना वास्तविक शिक्षा की बुनियाद के रूप में स्वीकृत हो चला।

पाठ्यचर्या पर प्रथम परिचर्चा

परन्तु लंबे अर्से तक कबीले के कुछ रूढ़िवादी सदस्य धार्मिक आधार पर औपचारिक शिक्षा पद्धति का विरोध करते रहे। ''वह महान रहस्य जो बादलों की गरज में बोलता है और बिजली में चलता है,'' उन्होंने घोषणा की, ''जिस महान रहस्य ने इंसानों को जीवन दिया है और जो अपनी इच्छा से जीवन छीन भी लेता है, अगर उस महान रहस्य ने चाहा होता कि बच्चे वास्तव में मछलियां

पकड़ने, घोडों का शिकार करने या बाघों को डराने का काम करें तो वह बच्चों की प्रकृति में ही मछलियां पकड़ने, मुद्गर प्रहार करने व बाघों को डराने का सहजबोध स्थापित कर देता। नव-मुष्टि सब सिखाने की चेष्टा कर न केवल महान रहस्य के प्रति अश्रद्धा जता रहा है, बल्कि वह महामूर्ख भी है, क्योंकि वह मानव प्रकृति को ही बदलने की चेष्टा कर रहा है।''

इस पर आधे आलोचकों ने यह नारा लगाना प्रारंभ कर दिया कि, ''अगर आप महान रहस्य की इच्छा का विरोध करेंगे तो मृत्यु के भागी बनेंगे।'' शेष आलोचक समवेत स्वर में बोल उठे, ''मानव की प्रकृति को भला कैसे बदला जा सकता है?''

पर नव-मुष्टि केवल शिक्षा प्रशासक व सिद्धांतवादी ही न था वह शिक्षा राजनेता भी था, अत: उसने दोनों ही तर्कों का विनम्र उत्तर दिया। उसने अधिक धार्मिक प्रवृत्ति वाले लोगों से कहा कि, ''सच तो यह है कि महान रहस्य, 'स्वयं ने' इस नवीन काम की आज्ञा दी है। बल्कि उसने ही यह काम किया भी है क्योंकि उसी ने बच्चों के मन में सीखने की ललक जगाई। अन्यथा दैवी सहायता के बिना बच्चे क्योंकर सीख पाते। इसके लिए उन्हें महान रहस्य की दिव्य शक्ति की आवश्यकता पड़ी। मछलियों, घोड़ों व वक्रदन्ती बाघों के विषय में महान रहस्य की वास्तविक इच्छा क्या है यह तो केवल वही समझ सकता है जो नव-मुष्टि शाला के इन तीनों विषयों में पारंगत हो।'' मानव प्रकृति बदल नहीं सकती का नारा लगाने वालों का ध्यान नव-मुष्टि ने इस तथ्य की ओर आकृष्ट किया कि पाषाण युग की संस्कृति शिखर तक इसलिए पहुंच सकी क्योंकि मानव स्वभाव बदला है। जिस प्रक्रिया ने समुदाय को इतना ऊंचा उठाया उसे नकारना तो देशद्रोह-सा लगता है।

''मैं जानता हूं, मेरे कबीले के साथियो'', उस अग्रणी शिक्षाविद् ने अपने तर्क का समापन करते हुए गंभीरता से कहा, ''मैं जानता हूं कि आप सब महान रहस्य के विनम्र व समर्पित सेवक हैं। मैं जानता हूं कि आप जानबूझ कर उसकी इच्छा का विरोध पल भर के लिए भी नहीं करेंगे। जानता हूं कि आप सब इस गुहा-साम्राज्य के बुद्धिमान और स्वामिभक्त नागरिक हैं। यह भी जानता हूं कि आपकी पवित्र व महान देशभक्ति आपको यह अनुमति नहीं देगी कि आप हमारे गुहा साम्राज्य की सर्वश्रेष्ठ संस्था - पाषाणयुगीन शिक्षा पद्धति के विकास का विरोध करें। अब, जब आप इस संस्था की वास्तविक प्रकृति व उद्देश्य को समझ गए हैं, तो मेरा विश्वास है कि आप इसकी सुरक्षा और सहयोग में यथासंभव योगदान देंगे।''

इस गुहार से प्रतिक्रियावादी ताकतों को भी नव शाला के पक्ष में कर लिया गया और कालांतर में समुदाय में जो लोग कुछ भी हैसियत रखते थे, यह समझने लगे कि अच्छी शिक्षा के मूल में मछली पकड़ना, घोड़ों पर मुद्गर प्रहार करना और बाघों को डराना के तीन विषय हैं। नव-मुष्टि और उसके समवयस्क धीरे-धीरे वृद्ध हुए और महान रहस्य उन्हें बटोर कर खाड़ी के भी परे स्थित सूर्यास्त के देश में ले गया। कबीले के दूसरे पुरुषों ने शिक्षा पद्धति का अधिकाधिक उपयोग किया जब तक कि कबीले का एक-एक बच्चा इन तीनों बुनियादी विषयों के अभ्यास में दक्ष न हो गया। यों कबीले की प्रगति होती रही और वह पर्याप्त मांस, चर्म और सुरक्षा से समृद्ध रहा।

शिक्षा अभ्यास से जुड़ने की तात्कालिक प्रेरणाा उसे अपने बच्चों को खेलते हुए देख मिली। उसने देखा कि बच्चे गुहाद्वार के पास हड्डियों, खपच्चियों और चमकदार रंगीन पत्थरों से खेल रहे हैं। उसने गौर किया कि बच्चों के खेल में गतिविधि के तात्कालिक आनंद से परे कोई उद्देश्य नहीं होता। तब उसने बच्चों की गतिविधियों की तुलना वयस्कों की गतिविधियों से की। उसने पाया कि बच्चे मौज-मस्ती के लिए खेलते हैं; परन्तु वयस्क अपने जीवन की सुरक्षा और समृद्धि के लिए काम करते हैं। बच्चे हड्डियों, खपच्चियों और पत्थरों का उपयोग करते हैं जबकि वयस्क भोजन, आश्रय व वस्त्र की व्यवस्था करते हैं। बच्चे स्वयं को ऊब से बचाते हैं, जबकि वयस्क स्वयं को खतरों से बचाते हैं।

कल्पना यह की जा सकती है कि यह सब अनंत काल तक यथावत चलता रहता अगर समुदाय की जीवन स्थितियां भी यथावत बनी रहतीं। पर परिस्थितियां बदलीं और जहां एक समय गुहा साम्राज्य में जीवन सुरक्षित व आनंददायक था, वह अब असुरक्षित व चिंताजनक बन गया।

परिवर्तन व चुनौतियां

दुनिया के उस हिस्से ने नव हिम युग का आगमन हो रहा था। पास स्थित पर्वत से एक विशाल हिमनद मैदानी इलाके की ओर बढ़ चला। साल दर साल वह खाड़ी के नजदीक सरकने लगा और आखिरकार नदी की धारा से मिल गया। हिम पिघलने लगा। अपनी लंबी यात्रा के दौरान जो मिट्टी-गारा हिमनद ने एकत्रित किया था वह विभिन्न नदियों-तालाबों में मिलने लगा। एक समय जिन तालाबों का पानी स्फटिक-सा पारदर्शी

था और जिसका तल साफ नजर आता था, अब गंदला और दूधिया बन गया।

समुदाय का जीवन तत्काल एक महत्त्वपूर्ण अर्थ में बदला। हुआ यह कि अब हाथों से मछलियां पकड़ना असंभव हो गया। गंदले पानी में मछलियां नजर ही नहीं आती थीं। और तो और धीरे-धीरे इस खाड़ी की मछलियां अधिक भीरू, चौकन्नी और चतुर भी होती जा रही थीं। पहले जैसी मंद, शिथिल और बहादुर मछलियां अब कहां थीं जो पीढ़ी दर पीढ़ी खाली हाथों लपक ली गई थीं। अब जो मछलियां बचीं वे चतुर थीं। वे गंदले पानी और हिमखण्ड़ों के नीचे दुबक जाती थीं। प्रवीण से प्रवीण व प्रशिक्षित मछुआरों को भी चकमा दे जाती थीं। जिन कबीलावासियों ने माध्यमिक स्तर पर शाला में मछली पकड़ने का उच्चतर अध्ययन किया था उनमें और इसी विषय को बुनियादी स्तर पर सीखने वाले अल्प शिक्षित सदस्यों के नतीजों में कोई अंतर न रहा। यहां तक कि विश्वविद्यालय के स्नातक जिन्होंने मछली पकड़ने का विशेष अध्ययन किया था वे भी इस समस्या को सुलझा नहीं पा रहे थे। मछली पकड़ने की कितनी भी श्रेष्ठ शिक्षा क्यों न पाई हो, व्यक्ति उस स्थिति में मछली पकड़ ही नहीं पा रहा था, जब पकड़ने को मछलियां ही न मिल रही हों।

पिघलते पानी और बहकर आते हिम ने समूचे प्रदेश को गीला भी कर दिया। खाड़ी के किनारे से काफी दूर स्थित जमीन तक दलदली हो चली। बेवकूफ रोएंदार घोड़े जो ऊंचाई में मात्र पांच या छह फीट के हुआ करते थे और चार उंगलियों वाले अगले व तीन उंगलियों वाले पिछले पैरों पर दौड़ा करते थे, मुद्गर प्रहार के लिए आदर्श पशु थे। पर उनकी एक विशेषता बड़ी खतरनाक थी। वे महत्त्वाकांक्षी थे। वे बिचली उंगलियों पर दौड़ना चाहते थे। उनका सपना था कि वे छोटे व भीरु पशुओं के बदले सशक्त आक्रामक पशु बन जाएं। उनका सपना था कि आगे, सुदूर भविष्य में उनके वंशज कम से कम सोलह हाथ ऊंचे हों उनका वजन आधे टन से भी अधिक हो और वे अपने ऊपर चढ़ने की चेष्टा करने वाले सवार को झटके से धरती पर पटक दें। उन्हें पता था कि ये लक्ष्य गीले दलदली प्रदेश में नहीं पाए जा सकते, सो वे सब पूर्व की ओर खुले मैदान की दिशा में चले गए जो पाषाण युग के शिकारी इलाकों से बहुत दूर थे। उनका स्थान क्रमश: हिरणों ने ले लिया, जो बर्फ की परतों के साथ आए थे और बेहद शर्मीले व फुर्तीले थे। साथ ही खतरे को सूंघ कर जान लेने में माहिर भी। उनके पास पहुंच कर मुद्गर प्रहार करना असंभव था।

कबीले के प्रशिक्षित घोड़ों पर मुद्गर प्रहार करने वाले सदस्य भी दिन प्रतिदिन शाला में सिखाई गई श्रेष्ठतम तकनीकों का उपयोग करने के बावजूद थके-मांदे खाली हाथ लौटते। बढ़िया से बढ़िया घोड़ा प्रहार शिक्षा उस स्थिति में नाकाम थी जब मुद्गर से प्रहार करने को घोड़े ही सामने न हों।

पाषाणयुगीन जीवन व शिक्षा पद्धति का पूर्णत: नष्ट करने की प्रक्रिया में अंतिम झटका तब लगा अब जलवायु में नई आर्द्रता ने वक्रदन्ती बाघों को निमोनिया से पीड़ित किया। ये पशु रोग को झेल नहीं सके और उनमें से अधिकांश की मृत्यु हो गई। बचे-खुचे, अधमरे से बाघ दक्षिण में स्थित रेगिस्तान की ओर रेंगने लगे। एक समय की सशक्त व बहुसंख्य पशु प्रजाती के ये थोड़े से मरियल प्रतिनिधि ही वहां तक पहुंच पाए।

तो अब पाषाणयुगीन समुदाय के सामने डराने को बाघ भी न थे। जाहिर था कि व्याघ्रों को डराने की श्रेष्ठतम तकनीकें भी अब केवल अकादमिक अभ्यास मात्र बन गईं। अपने आप में बेहतरीन होने के बावजूद कबीले की सुरक्षा के लिए वे आवश्यक नहीं रहीं। तथापि कबीले के इस खतरे का स्थान एक दूसरे अधिक बड़े खतरे ने ले लिया। क्रमश: हिमनद के साथ विशाल व हिंसक भालू भी सुदूर पर्वतों से नीचे घाटी की ओर बढ़े। ये भालू आग से नहीं डरते थे। और केवल रात ही नहीं, दिन के समय भी पगडण्डियों पर घूमा करते थे। स्कूल में पढ़े तमाम विकसित बाघ डराने के उपाय भी इन भालुओं के समक्ष नाकाम थे।

समुदाय अब विकट स्थिति में था। उनके पास खाने को न तो मछली थी, न मांस ही, तन ढकने को पशु चर्म भी न था, न ही उस रोएंदार मृत्यु से सुरक्षा थी जो दिन-रात उनके आवागमन के पथों पर विचरते थे। अगर कबीले को अपना अस्तित्व बचाना था तो इन परेशानियों से उन्हें निपटना था।

कबीले ने किया चुनौतियों का सामना

कबीले के सौभाग्य से, उसके कुछ सदस्य पुराने नव-मुष्टि तर्ज के थे। ऐसे व्यक्ति जिनमें कुछ करने की लियाकत थी और सोचने का साहस भी। उनमें से एक गंदली नदी की धारा में खड़ा था, उसकी आंतें भूख से कुलबुला रही थीं, वह एकाध मछली पकड़ अपनी, भूख शांत करना चाहता था। उसने बार-बार पुरानी मछली पकड़ने की तकनीकों का उपयोग किया, इस उम्मीद से कि शायद वह कारगर हो जाए। पर उसके हाथ निराशा ही लगी। घनी निराशा से घिर उसने अंतत: शाला में सीखी तकनीक को नकार दिया और मछली पकड़ने के नए तौर-तरीकों पर विचार करने लगा। किनारे के पेड़ों से पतली पर मजबूत लताएं लटकी हुई थीं। उसने कुछ खींच कर तोड़ीं और उन्हें आपस में गूंथने लगा। यह काम किसी स्पष्ट उद्देश्य के साथ नहीं किया गया था। लताओं को गूंथते-गूंथते अचानक उसके यह समझ आया कि वह अपने और

अपने रोते बिलखते बच्चों का पेट भरने के लिए क्या कर सकता है। उसकी निराशा कुछ छंटी। वह अधिक तेजी, कुशलता और बुद्धिमानी से हाथ चलाने लगा। आखिरकार वह सफल हुआ - उसने एक अनगढ़-सा जाल बनाया। अपने एक साथी को हांक लगा उसने नए उपकरण का उपयोग समझाया। दोनों उस जाल को लेकर एक से दूसरे तालाब में गए और घंटे भर में उन्होंने ढेरों मछलियां पकड़ लीं। ये मछलियां गंदले पानी की चतुर मछलियां थीं। उन्होंने जितनी मछलियां पकड़ीं उनकी संख्या उससे भी अधिक थी जितनी समूचा कबीला, मछली लपकने की श्रेष्ठतम पद्धति अपना कर भी न पकड़ पाता।

कबीले का दूसरा सदस्य भूखे पेट उन्हीं जंगलों में भटक रहा था, जहां पहले कभी असंख्य बेवकूफ छोटे घोड़ों की भरमार थी। पर जहां अब हाथ न आने वाले चपल-चंचल हिरण बसते थे। वह जानता था कि मुद्गर प्रहार से घोड़ों का शिकार करने के सभी तरीके जो उसने किसी समय शाला में सीखे थे, हिरणों के शिकार में पूर्णत: निरर्थक सिद्ध होंगे। अत: उसने भी मछली का जाल बनाने वाले आविष्कारक की तरह, भूख के मारे नए तरीकों पर विचार किया। जिस राह से हिरण आते जाते थे वहां के एक छोटे लचीले पेड़ की शाखा को उसने झुकाया और उसमें मजबूत लता का एक फंदा बना लटका दिया। इस उपकरण को उसने कुछ ऐसी चतुराई से बनाया कि वहां से गुजरने वाला पशु फंदे में फंसे और उसके फंसते ही वह लचीला पेड़ तन कर सीधा हो जाए। उसने ऐसे फंदों की एक श्रृंखला बनाई और वह एक ही रात में इतना मांस और चर्म इकट्ठा कर सका जितना दर्जन भर मुद्गर से घोड़ों का शिकार करने वाले शिकारी सप्ताह भर में भी नहीं कर सकते थे।

कबीले के तीसरे सदस्य ने भयानक भालुओं की समस्या का समाधान तलाशने की ठानी और वह प्रत्यक्ष व क्रांतिकारी तरीके से विचार करने लगा। इस सोच-विचार के फलस्वरूप उसने भालुओं के पथ पर एक गहरा गड्ढा खोदा और उसे टहनियों और पत्तों से पूरी तरह ढक दिया ताकि भालू उसी राह पर आगे बढ़ें और गढ्ढे में गिर कर तब तक फंसे रहें जब तक कबीले के कई सदस्य लाठियों और पत्थरों की मदद से उसका काम तमाम न कर दें। इस अविष्कारक ने अपने दोस्तों को गड्ढा खोद उसे ढंकना सिखाया। समुदाय के आस-पास कई गड्ढे खोद लिए गए। यों कबीला अब पहले से भी अधिक सुरक्षित हो गया। साथ ही कबीले को पहले की तुलना में अधिक मांस व चर्म भी उपलब्ध हुआ। जो फांसे गए भालुओं से उन्हें मिला।

''नादान मत बनो'' विद्वान बुजुर्गों ने दयासिक्त मुस्कुराहट के साथ कहा, ''हम मछली लपकना, दरअसल मछली पकड़ने के लिए नहीं सिखाते; यह तो हम इसलिए सिखाते हैं ताकि महज प्रशिक्षण से समूचे शरीर की सामान्य चपलता विकसित हो सके। हम घोड़ों पर मुद्गर प्रहार करने लिए मुद्गर प्रहार करना थोड़े ही सिखाते हैं; यह हम इसलिए सिखाते हैं ताकि शिक्षार्थी की सामान्य शक्ति का विकास हो सके। ऐसा विकास हिरणों के लिए फांस बनाने की रसहीन व अति विशिष्ट गतिविधि से संभव ही नहीं है। हम बाघों को डराने के तरीके बाघों को डराने के लिए सिखाते ही कब हैं; यह तो हम छात्रों में ऐसे साहस का विकास करने के लिए सिखाते हैं जिसका जीवन के प्रत्यके पहलू पर असर पड़ता है, पर जो भालू मारने की घटिया स्तर की गतिविधि से सीखा नहीं जा सकता है।''

जैसे-जैसे इन नए अविष्कारों की जानकारी फैली, कबीले के शेष सदस्य जीवन के नए तौर-तरीकों से परिचित होने लगे। लोगों ने मछलियों के जाल बनाने, हिरणों के लिए फंदा बनाने और भालुओं के लिए गड्ढे खोदने में खूब मेहनत की। कबीला फिर से व्यस्त और समृद्ध हो चला।

पाठ्यचर्या पर दूसरी परिचर्चा

ऐसे भी कुछ विचारवान व्यक्ति थे जो काम करते-करते प्रश्न भी पूछते थे। इनमें से कुछ ने शालाओं की आलोचना भी की।

''जाल बुनने और उसे काम में लेने, फंदा बनाने और गड्ढे खोदने की गतिविधियां आधुनिक अस्तित्व के लिए अपरिहार्य हैं,'' उन्होंने कहा, ''तो फिर उन्हें शाला में सिखाया क्यों नहीं जाता?''

सुरक्षा चाहने वाले संयमी बहुसंख्यकों ने भोलेपन से पूछे गए इस प्रश्न का त्वरित जवाब दिया। ''शाला!'' उन्होंने उपहास से कहा, ''तुम अब शाला में तो नहीं हो न, तुम यहां धूल-माटी में कबीले के जीवन व सुख-चैन को बनाए रखने के लिए काम कर रहे हो। इन व्यावहारिक गतिवधियों का शालाओं से क्या लेना देना है? तुम अब पाठ नहीं पढ़ रहे हो। अगर तुम भरपेट खाना चाहते हो, तन को चमड़ा लपेट कर गरम रखना चाहते हो और अचानक काल का ग्रास बनने से स्वयं को बचाना चाहते हो, तो तुम अपने पाठों को मछली पकड़ने, घोड़ों पर मुद्गर प्रहार करने

और बाघ डराने के अकादमिक आदर्शों की चिन्ता बिसरा दो।''

परन्तु अतिवादी अपने स्तर पर प्रश्न उठाते रहे। उनका कहना था कि, ''मछलियों का जाल बनाने और उसका उपयोग करने, हिरणों के लिए फंदा बनाने और उसमें हिरणों को फंसाने और भालुओं को पकड़ने व मारने के लिए भी बुद्धि और कौशल की जरूरत होती है। हमारा दावा तो यह है बुद्धिमानी और कौशलों का विकास, शालाओं में ही होता है। और फिर ये गतिविधियां ऐसी भी तो हैं जो हमें जाननी-सीखनी चाहिएं। फिर स्कूल इन चीजों को क्यों नहीं सिखा सकते ?''

पर कबीले के अधिकांश लोग, खासकर विद्वान बुजुर्ग जो शाला को नियंत्रित करते थे इन सुझावों को सुन धीरज और औदार्य से मुस्कुराए। ''पर यह तो शिक्षा ही नहीं होगी।'' उन्होंने नरमी से कहा।

''क्यों भई, कैसे नहीं होगी ?'' अतिवादियों ने पूछा। ''क्योंकि यह तो महज प्रशिक्षण है'', बुजुर्गों ने धैर्य से समझाया। ''मछली पकड़ना, घोड़ों पर मुद्गर प्रहार करना और बाघों को डराना, जो हमारे मानक सांस्कृतिक विषय हैं, की तमाम बारीकियों के चलते स्कूली पाठ्यचर्या वैसे भी काफी लंबी-चौड़ी है। उसमें ये जाल बुनने, हिरणों के फांसने, गड्ढे खोदने और भालू मारने की नई सनकों को नहीं जोड़ा जा सकता । अरे भाई, इसके विचार मात्र से पाषाणयुगीन शिक्षण पद्धति के संस्थापक नव-मुष्टि का शरीर अपने शव-स्तूप में तड़प उठेगा। हमें दरअसल अपने बच्चों को बुनियादी विषयों में ही अधिक पक्का करना चाहिए। सच तो यह है कि हमारी माध्यमिक शालाओं के स्नातक भी आज समग्र अर्थ में मछली पकड़ने की कला को नहीं जानते, घोड़ों पर प्रहार करने वाले मुद्गरों को वे सिफत व सफाई से नहीं चला सकते और जहां तक बाघों को डराने के विज्ञान का प्रश्न है, इसमें तो शिक्षक भी पूरी तरह दक्ष नहीं हैं जबकि हम पुराने लोगों ने यह सब किशोरावस्था में ही सीख लिया था और उन्हें कभी भूले नहीं।''

''हद है!'' अतिवादी फट पड़े, ''कोई भी समझदार इंसान इस तरह की निरर्थक गतिविधियों में क्योंकर रुचि लेगा ?

जब मछलियां खाली हाथ पकड़ी ही नहीं जा सकतीं, तब उस तरीके को सीखने में क्या धरा है ? जब मुद्गर के प्रहार से शिकार करने के लिए घोड़े ही नहीं हैं, तो घोड़ों को कैसे धराशायी किया जाए सीखने का क्या तुक है ? और बच्चों को आग से बाघों को डराना अब क्यों सिखाया जाए, जब डराने को बाघ ही नहीं हैं? क्योंकि वे या तो मर चुके हैं या भाग चुके हैं ?''

''नादान मत बनो'' विद्वान बुजुर्गों ने दयासिक्त मुस्कुराहट के साथ कहा, ''हम मछली पकड़ना, दरअसल मछली पकड़ने के लिए नहीं सिखाते; यह तो हम इसलिए सिखाते हैं ताकि महज प्रशिक्षण से समूचे शरीर की सामान्य चपलता विकसित हो सके। हम घोड़ों पर मुद्गर प्रहार करने लिए मुद्गर प्रहार करना थोड़े ही सिखाते हैं; यह हम इसलिए सिखाते हैं ताकि शिक्षार्थी की सामान्य शक्ति का विकास हो सके। ऐसा विकास हिरणों के लिए फांस बनाने की रसहीन व अति विशिष्ट गतिविधि से संभव ही नहीं है। हम बाघों को डराने के तरीके बाघों को डराने के लिए सिखाते ही कब हैं; यह तो हम छात्रों में ऐसे साहस का विकास करने के लिए सिखाते हैं जिसका जीवन के प्रत्यके पहलू पर असर पड़ता है, पर जो भालू मारने की घटिया स्तर की गतिविधि से सीखा नहीं जा सकता है।''

इस घोषणा से अतिवादियों के खेमें में चुप्पी छा गई। एक अपावद के अलावा शेष सभी लोग मौन रह गए। यह सच था कि वह भी लज्जित था, पर वह इस कदर अतिवादी था कि उसने अंतिम बार फिर से प्रतिवाद किया।

''पर-पर, यह तो आपको मानना ही होगा'' उसने सुझाया, ''कि समय बदल गया है। क्या आप इन सामयिक गतिविधियों को शामिल करने की कोशिश नहीं कर सकते ? हो सकता है कि उनका भी कोई शैक्षिक मूल्य हो ?''

अब तो उसके अतिवादी साथियों को भी लगा कि उसने हद ही पार कर डाली है।

विद्वान बुजुर्ग इस पर नाराज हो गए। उनकी दयासिक्त मुस्कुराहटें पुछ गईं। ''अगर तुम स्वयं जरा भी शिक्षित होते'', उन्होंने कठोरता से कहा, ''तो तुम्हें यह भी पता होता कि शिक्षा का सार ही इसका कालातीत होना है। वह ऐसी वस्तु है जो परिस्थिति में आए तमाम बदलावों के बावजूद, ठोस शिला के समान आंधी-तूफान के थपेड़ों को सहने के बाद भी, स्थिर खड़ी रहती है। तुम्हें जानना चाहिए कि कुछ ऐसे सत्य भी हैं जो शाश्वत हैं और व्याघ्रदन्ती पाठ्यचर्या उनमें से एक है।'' ◆

अनुवाद – पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा